गेहूँ की वैज्ञानिक खेती

राँची में 2015-16 में 6360 हे. क्षेत्र में गेहूँ की खेती की गयी। जिसकी उत्पादकता 2000 कि.ग्रा. प्रति हे. थी।

खेत की तैयारी : गेहूँ की अच्छी पैदावार के लिये खेत की एक बार गहरी जुताई मिट्टी पलट हल से करके दो जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करें। प्रत्येक जुताई पर पाटा मार दें जिससे खेत की नमी बनी रहे तथा मिट्टी भुरभुरी हो जाय। खेत को समतल करके जल निकास युक्त बनायें।

प्रजाति का चयन : उच्च पैदावार के लिए अच्छी किस्मों का चुनाव बहुत जरूरी है। किसानों को बीजाई के समय एवं उत्पादन स्थिति को ध्यान में रखते हुए अनुमोदित किस्मों को लगाना चाहिए।

सिंचित, समय से बीजाई वाली किस्में: डी.बी. डब्ल्यू. 39, सी.बी. डब्ल्यू 38, राज 4120, के. 307, एच.डी. 2824, एच.डी. 2733, एच.यू.डब्ल्यू.468 (मालवीय गेहूँ), एन. डब्ल्यू. 1012, एच.पी. 1761 (जगदीश), पी.बी. डब्ल्यू. 343, के. 9107 (देवा), पी.बी. डब्ल्यू. 443 और एच.पी. 1731 (राज लक्ष्मी) तथा बीज दर 100 कि.ग्रा. प्रति हे., लगाने का समय मध्य नवम्बर तक उचित समय रहता है।

सिंचित, देर से बीजाई वाली किस्में: डी.बी. डब्ल्यू. 14, एन. डब्ल्यू. 2036, एच. डब्ल्यू. 2045, एच.पी. 1744(राजेश्वरी) और एच.डी. 2643(गंगा) तथा बीज दर 125 कि.ग्रा. प्रति हे. लगाने का समय दिसम्बर का प्रथम पखवाड़ा।

वर्षा आधारित, समय से बीजाई वाली किस्में: एच.डी. 2888, एम.ए.सी.एस. 6145, के. 9465 (गोमती) और के. 8962 (इन्द्रा) तथा बीज दर 125 कि.ग्रा. प्रति हे. व लगाने का समय अक्टूबर का दूसरा पखवाड़ा।

बीजाई के लिए आवश्यक तापमान, गहराई एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी : बीजाई के लिए औसत तापमान 21-25^0 सेल्सियस की आवश्यकता होती है तथा अच्छे फुटाव के लिए तापमान 16-20^0 सेल्सियस होना चाहिए। बीज लगभग 5 सें.मी. की गहराई में डालना चाहिए एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 सें.मी. होनी चाहिए। देर से बोए गए गेहूँ में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 17.5 सें.मी. तक रखनी चाहिए।

खाद की मात्रा एवं डालने का समय :

सिंचित, समय से बीजाई वाली किस्मों में : गेहूँ में 120:60:40 कि.ग्रा. नत्रजन, फॉस्फोरस, पोटाश प्रति हेक्टर की दर से डालनी चाहिए। एक तिहाई नेत्रजन तथा पूरी फास्फोरस एवं पोटाश बीजाई के समय, एक तिहाई नेत्रजन पहली सिंचाई पर तथा एक तिहाई नत्रजन दूसरी सिंचाई पर डालनी चाहिए।

सिंचित, देर से बीजाई वाली किस्मों में : 80:60:20 कि.ग्रा. नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश प्रति हेक्टर की दर से डालनी चाहिए। एक तिहाई नत्रजन तथा पूरी फास्फोरस एवं पोटाश बीजाई के समय एवं एक तिहाई नत्रजन पहली सिंचाई पर तथा एक तिहाई नत्रजन दूसरी सिंचाई पर डालनी चाहिए।

वर्षा आधारित बीजाई वाली किस्मों में : 60:30:20 कि.ग्रा. नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश प्रति हेक्टर की दर से बीजाई के समय ही डाल देनी चाहिए।

सिंचाई : आमतौर पर गेहूँ की फसल के लिए 3-6 सिचाइयों की आवश्यकता होती है। पौधों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। चंदेरी जड़ें निकलना (क्राउन रूट इनिशिएशन) एवं बाली आना (हेडिंग) ऐसी अवस्थाएँ है जहाँ नमी की कमी का कुप्रभाव उत्पादन पर अधिक पड़ता है। अतः इन अवस्थाओं पर सिंचाई करना अनिवार्य होता है। अगर मार्च की शुरूआत में तापमान सामान्य से बढ़ने लगे तो हल्की सिंचाई देना लाभदायक रहता है। अग्रलीखित तालिका पद ध्यान दें :

सिंचाई संख्या	**सिंचाई का समय** (बीजाई के बाद दिनों में)
दो	: 21, 85
तीन	: 21, 65, 105
चार	: 21, 45, 85, 105
पाँच	: 21, 45, 65, 85, 105
छः	: 21, 45, 65, 85, 105, 120

xxxxx